शकील आज़मी

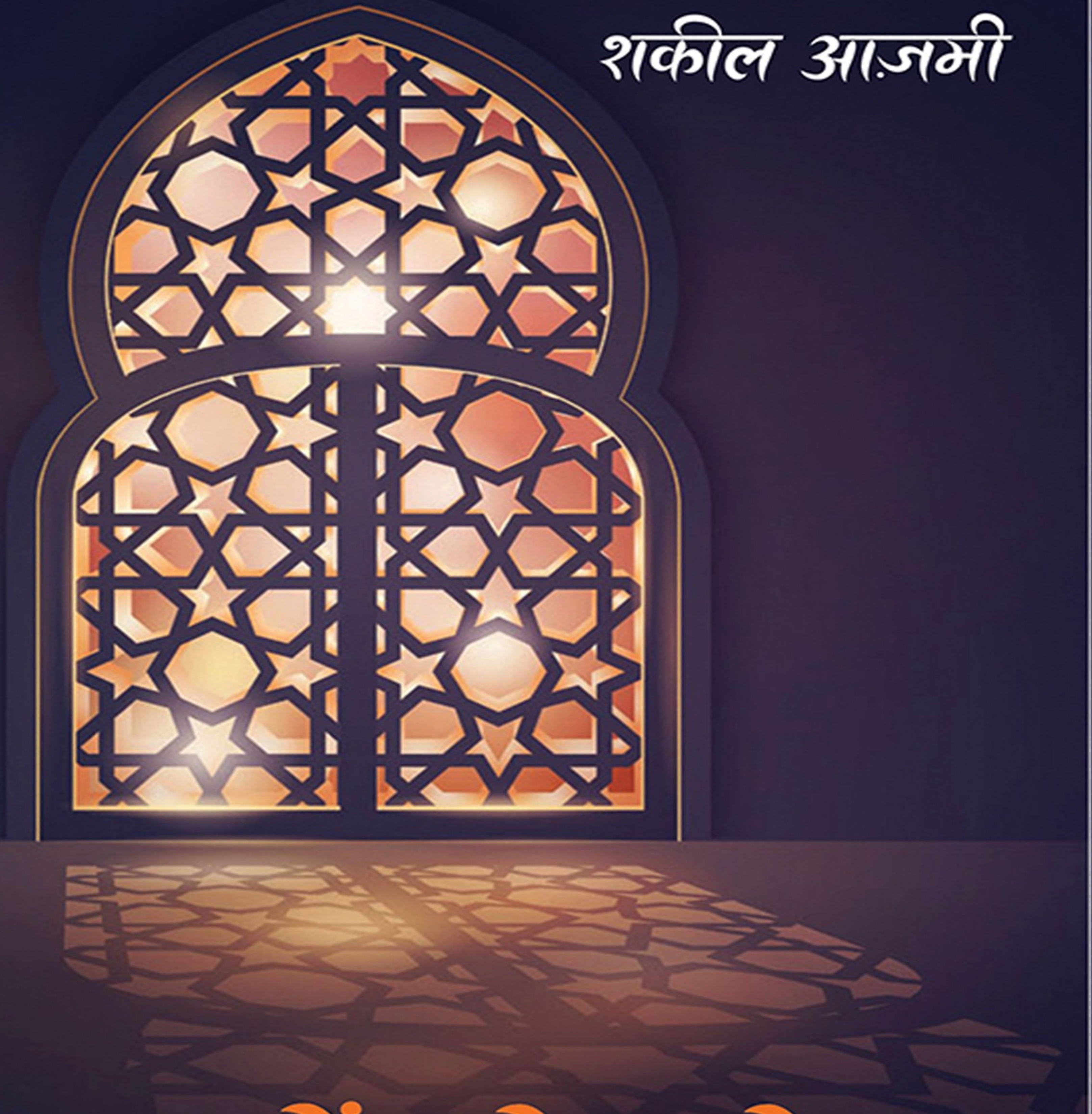

परों को खोल

संकलन एवं संपादन : सचिन चौधरी

परों को खोल

शकील आज़मी

संकलन एवं संपादन: सचिन चौधरी

MANJUL
मंजुल पब्लिशिंग हाउस

मंजुल पब्लिशिंग हाउस
कॉरपोरेट एवं संपादकीय कार्यालय
द्वितीय तल, उषा प्रीत कॉम्प्लेक्स, 42 मालवीय नगर, भोपाल-462003
विक्रय एवं विपणन कार्यालय
7/32 , भू तल, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
वेबसाइट: www.manjulindia.com
वितरण केन्द्र
अहमदाबाद, बेंगलुरू, भोपाल, कोलकाता, चेन्नई, हैदराबाद, मुम्बई, नई दिल्ली, पुणे

कॉपीराइट © शकील आज़मी 2017

यह संस्करण 2017 में पहली बार प्रकाशित

संकलन एवं संपादन: सचिन चौधरी

ISBN 978-81-8322-795-7

शकील आज़मी इस पुस्तक के लेखक होने की नैतिक ज़िम्मेदारी वहन करते हैं

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसे या इसके किसी भी हिस्से को न तो पुन: प्रकाशित किया जा सकता है और न ही किसी भी अन्य तरीक़े से, किसी भी रूप में इसका व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

• • •

शकील आज़मी की पैदाइश 20 अप्रैल 1971 को सहरिया, आज़मगढ़ (उत्तर प्रदेश) में हुई। उनकी माँ का नाम सितारुन्निसा ख़ान और पिता का नाम वकील अहमद ख़ान है।

शकील आजकल मुम्बई में रहते हैं। बचपन से ही शायरी ने शकील को अपना लिया था। उन्होंने अपनी पहली ग़ज़ल 1984 में लिखी, तब उनकी उम्र मात्र 13 वर्ष थी। 1994 में सूरत में एक बड़ा मुशायरा हुआ जिसमें उन्हें पहली बार अपनी शायरी पढ़ने का मौक़ा मिला। उस मुशायरे में बहुत से दिग्गज शायर थे, जैसे जावेद अख़्तर, निदा फ़ाज़ली और बशीर बद्र। उस मुशायरे में शकील को बेहद पसंद किया गया।

फिर क्या था, शकील आज़मी की शायरी का सफ़र परवान चढ़ने लगा। उन्हें बड़े-बड़े मुशायरों में बुलाया जाने लगा। उनकी शायरी की ख़ुशबू धीरे-धीरे पूरे हिन्दुस्तान से होती हुई सरहद के पार तक पहुँचने लगी। उन्हें विदेशों में भी बुलाया जाने लगा। अमेरिका, कैनेडा, दुबई, बरहीन, आबूधाबी, क़तर, मसक़त और न जाने कितने मुल्कों के सुनने वाले उनकी शायरी के दीवाने होते गए।

उनकी पहली किताब धूप दरिया (1996) में आई जो उर्दू में थी। उसके बाद उर्दू में उनकी कई किताबें आईं और परों को खोल हिन्दी में प्रकाशित उनकी पहली किताब है। उन्होंने कई फ़िल्मों में गीत भी लिखे हैं। उन्हें पहला मौक़ा वो तेरा नाम था (2004) फ़िल्म में कुक्कू कोहली ने दिया। उसके बाद फ़िल्मों में लिखने का सिलसिला लगातार जारी है।

शकील आज़मी की शायरी में एक ताज़ाकारी है। उनके यहाँ दूसरों से हटकर बात करने का ख़ास सलीक़ा है जो उनको पढ़ने और सुनने वालो को अपना बना लेता है।

शकील आज़मी को मैंने सबसे पहले वाह-वाह क्या बात है टी.वी. सीरियल के स्टेज पर देखा और सुना। फिर मैंने उनसे बातचीत की और इस तरह दोस्ती का सिलसिला शुरू हुआ। मैं शकील आज़मी का एक बड़ा क़द्रदान हूँ और मुझे ख़ुशी है कि मुझे उनकी शायरी पर काम करने का मौक़ा मिला।

सचिन चौधरी

संकलनकर्ता

मैं और मेरी शायरी

शायरी का जन्म भावनाओं से होता है और भावनाएँ पैदा होती हैं जीवन के आस-पास के उन तत्वों के स्वभाव और बरताव से जो शायर के जीवन में कभी जाने और कभी अनजाने में प्रवेश करते हैं। ये तत्व प्रेम बनकर व्यक्ति के मन में खिलते और शरीर में महकते हैं, ख़ुशी बन कर चेह्रे पर मुस्काते और खिलखिलाते हैं, पीड़ा बनकर आँखों से आँसू की तरह बहते हैं, क्रोध बनकर ज़बान पर गाली की तरह आते हैं और कभी-कभी अपनी सीमा लाँघकर हाथापाई, लाठी-डंडा, तलवार और बन्दूक़ तक पहुँच जाते हैं। भावनाएँ जब सीमा पार करती हैं तो व्यक्ति शायर नहीं होता, वो एक साधरण मनुष्य या आम आदमी होता है।

शायर की पीड़ा उसकी आँखों में आँसू बनकर नहीं आती बल्कि उसकी क़लम में रौशनाई का काम करती है। शायर अपने क्रोध को जी कर शायरी बनाता है और उसे जज़्बात के गीले शब्दों में काग़ज़ पर लिखता और सावन की रिमझिम फुहारों की तरह मन के होंटों से गुनगुनाता है। यदि शायर और आम आदमी के बीच का ये फ़र्क़ मिट जाये और आम आदमी भी शायर के स्तर पर आ जाए तो संसार की सारी भाषाएँ खत्म हो जाएँगी, सिर्फ़ एक भाषा प्रचलित होगी जिसका नाम मुहब्बत है।

शायरी का जन्म उन तस्वीरों से भी होता है जो शायर की अपनी नहीं होतीं लेकिन इन तस्वीरों के रंग शायर की आँखों में जमकर क़तरा-क़तरा उसके हृदय सागर में टपकते हैं और जीवन के रंगों में मिलकर उसके अपने हो जाते हैं। ये रंग कभी राष्ट्रीय स्तर पर दंगों में जलते हुए शह्र और राख होते हुए मासूम इन्सानों के होते हैं तो कभी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कुछ शक्तिशाली और ज़ालिम देशों के हाथों बनाए गए हिरोशिमा और नागासाकी, इराक़, अफ़ग़ानिस्तान और फ़िलिस्तीन के भी होते हैं। युद्ध देश में हो या देश के बाहर ख़ून तो इन्सानों का ही बहता है और शायर हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, यहूदी या पारसी के घर में पैदा होने के बावजूद अपनी ज़ात में एक ऐसे मज़हब का निर्माण करता है, जिसकी बुनियाद इन्सानियत की ज़मीन पर रक्खी जाती है। उसकी आत्मा ईश्वर की कुदरत और उसकी वहदानियत की तलाश में सफ़र

करती है, उसकी इस धार्मिकता का सफ़र न तो किसी के धर्म के दायरे को तोड़ने का लोभ रखता है और न ही किसी की आस्था को चोट पहुँचाने की साज़िश करता है। शायर की ये रूहानी यात्रा उस मुक़ाम से शुरू होती है जहाँ पहुँचकर तमाम रास्ते एक हो जाते हैं -

ख़ुदा का नाम लिखा है तमाम चेह्‌रों पर
मिरे लिए तो हर इक आदमी मुहब्बत है

चाहे गीता में या क़ुरान में हो
गुफ़्तगू प्यार की ज़बान में हो

महेश भट्ट की बहुचर्चित फ़िल्म नज़र में संगीतकार रूपकुमार राठोड़ के साथ मैंने एक सूफ़ी गीत लिखा था जो फ़िल्म की हीरोइन मीरा और जोगन का किरदार अदा कर रही नीना गुप्ता पर फ़िल्माया गया था। फ़िल्म की शूटिंग के दौरान जब महेश भट्ट पाकिस्तान गए तो वहाँ उन्होंने मीडिया को मेरा गीत यह कहकर सुनाया था कि यह गीत कोई हिन्दुस्तानी गीतकार ही लिख सकता था। गीत की चंद पंक्तियाँ इस तरह हैं -

श्याम की बन्सी पर मैं झूमूँ
शंकर के डमरू पर नाचूँ
करूँ मैं अल्लाह-अल्लाह
बोलूँ मैं मौला अली-अली
मैं जोगन बन गई
मिरी भक्ति है सिंगार मिरा
यही यार मिरा यही प्यार मिरा
मिरे रोम-रोम में राम बसे
मन मीरा में घनश्याम बसे
मिरे लब पर हरदम हरी-हरी
मैं बोलूँ मौला अली-अली
मैं जोगन बन गई

मेरे अन्दर का शायर अपने अड़ोस-पड़ोस, घर, घर के बाहर, सरहद और सरहदों के पार जहाँ तक देखता है, जहाँ तक महसूस करता है, वहाँ तक अपनी शायरी में सफ़र करता है और इस सफ़र के दृश्य अपनी शायरी के माध्यम से आपको दर्शाता है -

तोड़ दो तो भी सच ही बोलेगा
आइना कब किसी से डरता है

मेरे अन्दर का शायर बाज़ार की तिजारत से लेकर देश की सियासत तक के हंगामों से प्रभावित होता है। मेरे अन्दर का शायर घरेलू रिश्तों की गंभीरता से लेकर दोस्तों की बैठकों में होने वाले हँसी मज़ाक़ तक, मशीनों, कारखानों, कारोबार और बाज़ार में जीवन को चलाने वाले साधनों तक रोज़मर्रा से जुड़ी हुई घटनाओं और छोटी-छोटी बातों से प्रेरणा लेता है और उनके ताने-बाने से अपनी शायरी के लिए लिबास बुनता है। मेरे अन्दर का शायर जब प्रेमभाव में होता है तो चाँद में उसे प्रेमिका का चेह्रा दिखाई देता है -

चाँद को ऐसे तकता हूँ
जैसे तेरा चेह्रा हो

और जब वो भूका होता है तो वही चाँद उसे आसमान पर थाली की तरह नज़र आता है -

भूक में इश्क़ की तहज़ीब भी मर जाती है
चाँद आकाश पे थाली की तरह लगता है

जिस तरह मौसम बदलते हैं, उसी तरह इन्सान की तबीअ़त भी बदलती है, मौसम और इन्सान के मिज़ाज के साथ दोस्ती-दुश्मनी भी बदलती है, रिश्तों के रंग हल्के और गह्रे भी होते रहते हैं, घर तोड़कर नए बनाए जाते हैं, गाँव, कस्बों और शहरों के नाम, नक्शों, रास्तों और मन्ज़िलों की दिशाओं में परिवर्तन आता है। खुशी और ग़म, धूप और छाँव ज़िन्दगी का हिस्सा हैं। ज़िन्दगी और समाज के इस नित-नए बदलाव से मेरे अन्दर का शायर भी प्रभावित होता है और मेरी शायरी भी -

कोई भी ग़म हो बहुत देर तक नहीं रहता
मुहब्बतों में बिछड़ कर भी लोग जीते हैं

इस बदलती हुई दुनिया और आपके मिज़ाज से मैं और मेरी शायरी कितना मेल रखते हैं, मुझे आपसे ये जानने की लालसा रहेगी।

आपका, **शकील आज़मी**

शकील आज़मी की पुस्तकें, सम्मान व फ़िल्मों के लिए लिखे गए गीत

उर्दू में पुस्तकें

धूप दरिया (1996)
एश-ट्रे (2000)
रास्ता बुलाता है (2005)
ख़िजाँ का मौसम रुका हुआ है (2010)
मिट्टी में आसमान (2012)
पोखर में सिंघाड़े (2014)

अवॉर्ड

गुजरात गौरव अवॉर्ड, गुजरात उर्दू साहित्य अकादमी (2012)
कैफ़ी आज़मी अवॉर्ड, कैफ़ी आज़मी अकादमी, लखनऊ (2007)
गुजरात उर्दू साहित्य अकादमी अवॉर्ड (1996-2000-2005-2010-2012)
उत्तर प्रदेश उर्दू साहित्य अकादमी अवॉर्ड (1996-2005-2014)
बिहार उर्दू साहित्य अकादमी अवॉर्ड (2005-2010-2012-2014)
महाराष्ट्र उर्दू साहित्य अकादमी अवॉर्ड (2010-2014)

फ़िल्में

मदहोशी, ज़िद, ज़हर, तुम बिन - 2, 1920 : ईविल रिटर्न्स, हॉन्टेड, ई एम आई, नज़र, वो लम्हे, धोखा, लाइफ एक्सप्रेस, तेज़ाब (द एसिड ऑफ़ लव), करले प्यार करले, इश्क़ के परिन्दे, शोबिज़, थ्री, वो तेरा नाम था, धूम धड़ाका, यू आर माय जान, या रब, लख़नवी इश्क़, पहली नज़र का प्यार, ट्रंप कार्ड, और अन्य फ़िल्मों के अलावा कई टी.वी. धारावाहिकों के साथ गीतों व ग़ज़लों के अनेक प्राइवेट एलबम।

ग़ज़लें

नज़्में

चुनिंदा अशआर

फ़िल्मी नग़मे

ग़ज़लें

ग़ज़ल नीमबेहोशी के मौसम में जन्म लेती है और इसी मौसम की फ़ज़ा में खिलती और महकती है, होश की दख़्लअन्दाज़ी इस बहार में पतझड़ का काम करती है। उर्दू शायरी में ग़ज़ल सबसे नाज़ुक और मुश्किल विधा है, नाज़ुक इन मानों में कि अल्फ़ाज़ के चयन और उनके इस्तेमाल में ज़रा सी भी चूक ग़ज़ल के हुस्न को बिगाड़ देती है, मुश्किल इसलिए कि बरसों की रियाज़त और पूरे इन्वॉल्वमेंट के बग़ैर ये क़ाबू में नहीं आती। ग़ज़ल उस ख़ूबसूरत औरत की तरह है जो मर्द से भरपूर मुहब्बत चाहती है, अगर शायर ग़ज़ल का ध्यान न रक्खे, उसके नाज़ न उठाए तो ग़ज़ल शायर से ऐसे रूठती है कि महीनों बात नहीं करती। इस रूठी हुई महबूबा को मनाना आसान काम नहीं होता क्योंकि कई बार तो ये शायर को छोड़कर भी चली जाती है, और वो भी हमेशा के लिए।

—शकील आज़मी

1

कहीं कोई है जो नब्ज़े-दुनिया चला रहा है वही ख़ुदा है
जो हो के ग़ायब कमाल अपने दिखा रहा है वही ख़ुदा है

अंधेरी रातों के आँचलों में जो झिलमिलाता है नूर बनकर
जो चाँद तारों से आसमाँ को सजा रहा है वही ख़ुदा है

सहर की महकी हुई फ़ज़ा में सुनहरे सूरज का ताज पहने
जो वादियों पे गुलों की चादर बिछा रहा है वही ख़ुदा है

ये चहचहाते हुए परिन्दे इबादतों में हैं जिसकी शामिल
दरख़्त सजदे में जिसके सर को झुका रहा है वही ख़ुदा है

ग़िज़ाएँ [1] पहुँचा रहा है गहरे समुन्दरों में जो मछलियों को
चमकते मोती जो सीपियों में बना रहा है वही ख़ुदा है

जो बन के बादल ज़मीं पे बरसे, ज़मीं को सीचें, उगाए सब्ज़े [2]
जो कच्ची फ़सलों को धूप बनकर पका रहा है वही ख़ुदा है